श्रीवल्लभ-विज्ञान

अखिल भारतीय

पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद् का मुखपत्र

(हिन्दी संस्करण)

शुद्धाद्वैत पुष्टि-भक्ति-मार्ग के अध्ययन, संगठन
और प्रचार का एक मात्र हिन्दी मासिक

(ता० १ जुलाई १९६१ से प्रकाशित)

PH
294.5512
Ba 185

अनेक श्रीमद्गोस्वामि बालकों तथा विद्वानों के शुभाशीर्वाद
एवं शुभ कामनाएं प्राप्त

मूल संस्थापकः—नि० ली० द्वितीय गृहाधीश श्री १०८ गो०गिरिधर-लालजी महाराज इन्दौर-नाथद्वारा

प्रकाशकः—वैष्णव मित्र मंडल, इन्दौर

सम्पादकः—श्री गोपालदास झालानी बी. ए., बी. काम
श्री घनश्यामदास मुखिया एम. ए. (हिन्दी संस्कृत) साहित्य रत्न
श्री हरिकृष्ण वीरजी शास्त्री शुद्धाद्वैत विशारद

वार्षिक न्योछावरः—रु० ५—००

पत्र व्यवहारः—श्री गोपालदास झालानी बी. ए., बी. काम
सम्पादक व्यवस्थापक
यशोभवन, १ न्यूपलासिया स्ट्रीट २ इन्दौर

तारः 'झालानीको' इन्दौर
फोनः ५०६१

Library IIAS, Shimla
PH 294 551 2 Ba 185
00015768

PH
294.5512
B 185
23
29/7/83
INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
Acc. No. 15768
Date 23/10/86
SIMLA

श्री वल्लभ-विज्ञान के प्रकाशन पर अभिप्राय

श्री १०८ गो० श्री गोविन्दरायजी महाराज, पोरबन्दर:—

"हिन्दी में उपरोक्त मासिक का प्रकाशन आपका एक अत्युपयोगी कदम है ।'

श्रीमद् गो० श्री १०८ श्री मथुरेश्वरजी महोदय, बड़ौदा

"श्रीवल्लभविज्ञान सामयिक प्रथम वर्ष प्रथम अंक से लेकर आखिर के अंक तक आपके प्रेषित सभी अंक मुझे मिले । सभी को पढ़कर खुशी हुई । विशेष करके सुचारु संपादन, अच्छी लेख सामग्री, तथा मात्र साम्प्रदायिक उत्कर्ष की भावना को सामने रखते हुए वल्लभ विज्ञान सामयिक का संचालन मुझे अत्यन्त सराहनीय एवं संतोषप्रद लगा । हमारे शुद्धाद्वैत पाठ्य पुस्तक 'पुष्टिमार्गोपदेशिका' को हिन्दी अनुवाद से क्रमश: वल्लभविज्ञान में प्रगट करने से आपको धन्यवाद देते हैं ।

श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभुजी के जयंति उत्सव के उपलक्ष में प्रगट हुआ वल्लभविज्ञान का अंक देखकर तो मुझे बहुत ही प्रसन्नता हुई ।

मेरे मन में बहुत दिनों से यह भावना थी कि हिन्दी में भी एक अच्छा सामयिक प्रगट हो क्योंकि हिन्दी भाषा-भाषी जनों को भी हमारे श्रीमदाचार्य चरणों को समझने की जिज्ञासा है और उन लोगों में सांप्रदायिक सिद्धांत प्रचार की भी अतीव आवश्यकता है । आप लोगों की वल्लभविज्ञान योजना से संतोष हुआ । आशा है और भी ज्यादा वल्लभविज्ञान इस दिशा में उत्तरोत्तर सफल कार्य करेगा । आपकी भावनाओं को सहस्रश: धन्यवाद !

पू० पा० श्री १०८ गो० श्री दीक्षितजी महाराजात्मज
श्री १०८ चि० गो० श्री श्याममनोहरजी, बम्बई

"आपके तथा मुखियाजी के कुशल संपादन में प्रतिमास अवतरित होता 'श्री वल्लभ विज्ञान' विषय-चयन, संपादन, छपाई, कागज इत्यादि सभी दृष्टिकोणों से उच्चतर का ही नहीं, अपितु अत्यन्त अभिनन्दनीय भी है। सांप्रदायिक लेखकों की कमी अपना असामर्थ्य है, पत्र की या पत्रकारिता की न्यूनता नहीं। और यही प्रभुप्रार्थ्य है कि इस कमी को दूर करते हुए इस पत्र का प्रसार व प्रचार संप्रदाय के हेतु अधिकाधिक बढ़े। यद्यपि पूज्य श्री दादाजी यहां पर नहीं हैं तथापि उनकी ओर से भी पत्र की अभिनन्दनीयता वैष्णव समुदाय ज्ञातकरें"।

श्री प्रो० जेठालाल गोवर्धनदास शाह एम० ए० अहमदाबादः-

"आज से लगभग १२ मास पूर्व "श्री वल्लभविज्ञान" का प्राकट्य हुआ, फिर भी उसने बड़ी तेजी से प्रगति की है।.... यह पत्र सर्वांग से शुद्ध पुष्टिमार्गीय मासिक है। श्री महाप्रभुजी की शुद्ध पुष्टि की भावना, उसकी रक्षा, के लिये इसके कुशल सम्पादक प्रयत्नशील हैं।"

'सिद्धान्त रहस्य-एक अध्ययन' पर अभिप्रायः—

तृतीय गृहाधीश श्री १०८ गो० श्री व्रजभूषणलालजी महाराज कांकरोलीः-

"प्रस्तुत अध्ययन में सिद्धांत परिज्ञान, शास्त्रीय तलस्पर्शिता, एवं भावना तथा मनोवैज्ञानिकता का अच्छा परिपाक हुआ है"

श्री १०८ गो० श्री पुरुषोत्तम लालजी महाराज कोटाः—

"झालानीजी ने इस अध्ययनात्मक निबन्ध में सिद्धांत रहस्य ग्रंथ के टीकाकारों के आशय को योग्यतापूर्वक सरल भाषा में समझाने का सराहनीय प्रयास किया है.....झालानीजी को अपने प्रयास में सफलता मिली है।"

द्वितीय गृहाधीश श्री १०८ गो० श्री गिरिधरलालजी महाराज (नाथद्वारा) इन्दौर—

"गोपालदासजी झालानी के प्रयत्न एव परिश्रम से सर्वसाधारण जनता के लिये लाभ मिले इस दृष्टि को लक्ष्य में रखकर के 'सिद्धांत रहस्य एक अध्ययन' नामक पुस्तक प्रस्तुत की जारही है। इस के अध्ययन से सांप्रदायिक ज्ञान होकर समाज में जागृति आए यही अपेक्षित है".....(श्री हरिरायजी महाप्रभु के जीवन चरित्र प्रकाशन पर) "जीवन चरित्र के इस दूसरे अध्ययन में श्री हरिराय जी के जीवन चरित्र एवं ग्रंथ निर्माण सम्बन्धी विवरण संक्षेप में परन्तु समग्ररूप से बहुत सुन्दर रूप से किया गया है।.....यह जीवन चरित्र प्रत्येक पुष्टिमार्गीय वैष्णव के लिये अत्यन्त मननीय है "श्री वल्लभविज्ञान" की यह सेवा सराहनीय है।"

'ब्रजयात्रा विशेषांक पर अभिप्राय'

पूज्यपाद श्री १०८ गो० श्री ब्रजरत्नलालजी महाराज, सूरतः—

"ब्रज यात्रा अंक प्राप्त हुआ। बहुत सुन्दर वर्णन लिखा गया है और बहुत सुन्दर अंक प्रकट हुआ है"

संसद सदस्य पद्मभूषण सेठ गोविन्ददासजी नई दिल्लीः—

'श्रीवल्लभविज्ञान' का ब्रजयात्रा विशेषांक प्राप्त हुआ। यह अंक ब्रजयात्रा का समस्त वृत्त बड़ी कुशलता से व्यक्त करता है। यात्रा का इतिहास, साथ ही उसकी वर्तमान स्थिति सभी बातों का इस अंक द्वारा परिचय प्राप्त हो जाता है, वह भी इतने संक्षेप से कि पाठक का मन जरा भी नहीं ऊबता। ऐसे अंक के लिये मैं हार्दिक बधाई देता हूं।

श्री वल्लभविज्ञान अब तीसरे वर्ष में प्रवेश कर रहा है। अपने दो वर्ष के अल्प जीवन में इस पत्र ने संकीर्णता से दूर रहते हुए वल्लभ सँप्रदाय की बड़ी अच्छी सेवा की है और आधुनिक काल के अनुरूप। इससे वल्लभ संप्रदाय के अनुयायियों को मूल्यवान् प्रेरणा

मिली है । नास्तिकता के इस युग में इस प्रकार की प्रेरणा बहुत ही आवश्यक है । भविष्य में भी 'श्री वल्लभ विज्ञान' इसी प्रकार कार्य सुचारु रूप से करता रहे, यही भगवान से प्रार्थना है ।

'श्री सुबोधिनी-पथ-प्रदर्शक' विशेषांक पर अभिप्रायः-

श्री १०८ गो० श्री व्रजरायजी महाराज अहमदाबादः—

'श्री वल्लभविज्ञान' का श्री सुबोधनी-पथ-प्रदर्शक अंक प्राप्त हुआ । अंक संग्राह्य एवं सदुपयोगी है । वल्लभविज्ञान को प्रगति होना, इस समय अत्यन्त आवश्यक है, जबकि समग्र पुष्टिमार्ग के सामने उसके अस्तित्व-अन-अस्तित्व के प्रश्न जारी रूप धारण किये हुए हैं । विचार आदान प्रदान, अथ च प्रचार तथा संगठन के लिये यह पत्र अपनी उपयोगिता प्रतिदिन बढ़ाकर वैष्णव जगत का अनिवार्य पत्र बने, यह शुभकामना एवं आशीर्वाद है ।

श्री १०८ गो० श्री माधवरायजी महाराज पोरबन्दरः-

'श्री वल्लभविज्ञान' का ३-४ वर्ष का संयुक्तांक 'सुबोधिनी-पथ-प्रदर्शक, प्राप्त हुआ । प्रारंभिक भूमिका से लेकर ग्रंथ का उद्देश्य, कथावस्तु, एवं प्रागैतिहासिक तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए जो निर्माण कार्य किया जा रहा है वास्तव में हिन्दी जगत् के लिये वह महत्वपूर्ण, मौलिक एवं नूतन प्रयास होगा, जो तत्वविदों के लिये परम उपादेय सिद्ध होगा। गुजराती साहित्य संसार में तो कुछ प्रगतिशील विद्वानों ने श्री सुबोधिनी का यथाशक्ति प्रकाशन किया है किन्तु अद्यावधि हिन्दी जगत में इसका अभाव था, जिसकी पूर्ति प्रस्तुत प्रयास के द्वारा पूर्ण होती देख प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है । इस दिशा में आपका एवं वल्लभविज्ञान का सहयोग आदरणीय एवं प्रशंसनीय है । मैं हार्दिक बधाई देता हूं ।'

'कल्याण' पत्र के विद्वान् सम्पादक प० भा० श्री चिम्मनलाल गोस्वामि

'श्रीवल्लभ-विज्ञान' का सुबोधिनी-पथ-प्रदर्शक विशेषांक देखा, बड़ी प्रसन्नता हुई । श्रीसुबोधिनी आचार्य महाप्रभु की भगवती वाणी

का कृपाप्रसाद है वैष्णवों क लिये, पुष्टिमार्गीय वैष्णवों का तो यह धन ही है। श्रीसुबोधिनी टीका में शुद्धाद्वैत दर्शन के प्रकाश में श्री आचार्यचरण महाप्रभुजी ने श्रीमद्भागवत शास्त्र का गूढ़ भाव प्रकट किया है और निस्संदेह इस तरह के गूढ़ भाव का प्राकट्य उन्हीं क समान समर्थ आचार्य के अद्भुत दिव्य प्रयास का प्रतीक है।

श्रीभागवत के द्वादश स्कन्ध निकुञ्जरमणेश्वर श्रीनाथजी के लीला-गत द्वादश अंग हैं, और श्रीसुबोधिनी उन अंगों की दिव्य ज्योति है। ज्योति को समझाने के लिये आप का सुबोधिनी-पथ-प्रदर्शक विशेषांक एक सफल प्रयोग है। मेरा हार्दिक धन्यवाद स्वीकार कीजिये।

पुनश्च—श्रीवल्लभविज्ञान के द्वारा श्रीआचार्य महाप्रभु के सिद्धांतों का बड़े ही सुन्दर ढंग से प्रचार किया जा रहा है। उसमें प्रतिमास दी जाने चाली सामग्री से उक्त सिद्धांतों को समझने में भी पर्याप्त सहायता मिल रही है तथा पुष्टिमार्गीय वैष्णवों में संगठन की दिशा में भी इसके द्वारा समुचित प्रयास हो रहा है—यह जानकर बड़ा संतोष होता है।

डा० विश्वनाथ शुक्ल, अध्यक्ष हिन्दी एवं संकृत विभाग अलीगढ़-विश्वविद्यालयः--

'वास्तव में 'श्री वल्लभविज्ञान' का प्रत्येक नवीन अंक गतांक से कुछ न कुछ वैशिष्ट्य लेकर आता है यह अत्यन्त आनन्द की बात है। अब तक 'विज्ञान' के द्वारा श्री वल्लभ दर्शन एव भक्ति मार्ग की जो सेवा हुई है वह अपूर्व है। श्री सुबोधिनी-पथ-प्रदर्शक ने तो वस्तुतः अकथनीय उपकार किया है।

श्री गोविंदलाल एच० भट्ट एम० ए०:-

'श्री सुबोधिनी-पथ-प्रदर्शक का भाग तथा श्रीमदाचार्यचरणों के सिद्धान्तों का स्वल्प परिचय का भाग मैंने पढ़ा। बहुत आनन्द हुआ।.....'

शास्त्री श्री गोवर्धनेश विट्ठलजी जोशी साहित्यधर्माचार्य, काव्य पुराण-तीर्थ, आदि रांदेर:-

'श्री वल्लभविज्ञान का श्री सुबोधिनी-पथ-प्रदर्शक विशेषांक मिला पढ़कर अत्यधिक आनन्द हुआ । आपने प्राचीन साहित्य की गवेषणा एवं प्रकाशन के कार्य में जो अवधान किया है वह श्लाघनीय है । आप वैष्णवों के लिये एक अनुपम महाकार्य कर रहे हैं तदर्थ आपको पुनः पुनः अभिनन्दन देता हूं ।'

श्रीवल्लभविज्ञान के विशिष्ट प्रकाशन

सिद्धान्त रहस्य-एक अध्ययन न्यो०	१-०,०
श्री हरिरायजी महाप्रभु-जीवन चरित्र और साहित्यावलोकन न्यो०	०-५०
पुष्टिमार्गोपदेशिका न्यो०	१-२५
शाश्वत आनन्द और वह कैसे उपलब्ध हो न्यो०	०-३०
Lasting Happiness And How To Achieve It Rs.	0--30
सिद्धान्त रत्न-गोस्वामि महानुभावों एवं विद्वानों के लेखों का संग्रह न्यो०	१-५०
शोडषग्रंथ-मूल, तथा संक्षिप्त हिन्दी आशय न्यो०	०-७५
श्रीपुरुषोतम सहस्र नाम स्तोत्र-सरल हिन्दी अर्थ सह न्यो०	०-५०

विशेषांक

श्रीवल्लभ प्राकटय महोत्सव विशेषांक न्यो०	[illegible]
श्री ब्रजयात्रा विशेषांक न्यो०	[illegible]
श्री वल्लभ प्रादुर्भाव विशेषांक न्यो०	[illegible]
श्रीसुबोधिनी पथ प्रदर्शक भाग १ न्यो०	[illegible]

Library IIAS, Shimla
PH 294.551 2 Ba 185
00015768

छप रहा है

श्रीसुबोधिनी पथ प्रदर्शक भाग २ (तामस प्रकरण)

प्राप्ति का स्थान:-श्री गोपालदास झालानी, संपादक
श्री वल्लभविज्ञान यशोभवन [illegible] स्ट्रीट २ इंदौर

मॉ. प्रि लि., इन्दौर

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
Acc. No. 15768
Date 25/1/96
SIMLA